रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–74, अंक : 9, 25-28 मई 2017 तदनुसार 15 ज्येष्ठ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

माताएँ सन्तान के ज्ञान–कर्म–वस्त्र का विस्तार करें

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति।
उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ।।

–ऋ० ५।४७।६

शब्दार्थ–मातरः = माताएँ **अस्मै** = इस पुत्र के लिए **धियः** = बुद्धियों तथा **अपांसि** = कर्मों को **वि+तन्वते** = विस्तृत करती हैं और **पुत्राय** = सन्तान के लिए **वस्त्रा** = वस्त्र **वयन्ति** = बुनती हैं। **वधवः** = वधुएँ **मोदमानाः** = प्रसन्न होती हुई **उपप्रक्षे** = सम्पर्क के निमित्त **दिवः + पथा** = ज्ञान के मार्ग से **वृषणः** = वीर्य–सेचन–समर्थ पुरुषों को **अच्छ** = भली–भाँति **यन्ति** = प्राप्त होती हैं। अथवा **वधवः** = वधुएँ **उपप्रक्षे** = सम्बन्ध के निमित्ति **मोदमानाः** = आनन्द मनाती हुई **वृषणः** = वीर्यवान् पुरुषों को **दिवः** = चाहती हुई **पथा** = धर्ममार्ग से **अच्छ+यन्ति** = ठीक प्रकार प्राप्त होती हैं।

व्याख्या–सन्तान जो कुछ है वह प्रायः माता–पिता के आचार–विचार, व्यवहार–आहार तथा संस्कार का प्रतिबिम्ब है। माता–पिता के आचार–विचार का संस्कार बालक पर अवश्य पड़ता है और उनमें से भी माता का प्रभाव बहुत अधिक होता है। माता चाहे तो बालक को शूरवीर, धीर–गम्भीर, धर्मात्मा–महात्मा, विद्वान्–पण्डित, ज्ञानी–ध्यानी बना दे। माता चाहे, तो उसे कायर, भीरु, विक्षिप्त, चञ्चल, पापात्मा, दुरात्मा, मूढ़, अज्ञ, विषयी, लम्पट बना दे। बालक का जीवनप्रभात माता की गोद में बीतता है। माता की एक–एक इङ्गित, चेष्टा, भाषण, गमन, आसन–सभी उस बालक के लिए अनुकरणीय होते हैं। उनको देखकर, असमर्थ होता हुआ भी बालक उनका अनुकरण करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह कहना होगा कि बालक की प्रवृत्ति को माता ही बनाती है। वेद कहता है–**'वितन्वते धियो अस्मा अपांसि.....मातरः'** = माताएँ अपनी सन्तान के लिए बुद्धियों तथा कर्मों का विस्तार करती हैं।

माता का उत्तरदायित्व बहुत है। माताएँ सन्तान–सम्बन्धी अपने इस उत्तरदायित्व को समझ जाएँ, तो संसार का संकट दूर हो जाए। माताएँ क्षुद्र कौटुम्बिक वा दैशिक दुर्भावनाओं से ऊपर उठाकर समस्त संसार को अपना घर समझकर विशाल मानव–समाज की कमनीय कल्याण–कामना से प्रेरित होकर अपना विचार, उच्चार तथा आचार ऐसा बनाएँ कि बालकों के हृदय में **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भव्य भावना उत्पन्न हुए बिना न रहे। तब अवश्यमेव संसार से अशान्ति का निर्वासन होकर शान्ति का साम्राज्य होगा। माताओं का एक और कार्य भी यहाँ बताया गया है–**'वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति'** = सन्तान के लिए वस्त्र माताएँ बुनती हैं। यदि यह कार्य भी माताएँ सँभाल लें, तो गृहशिल्प की उन्नति होकर व्यापारिक स्पर्धा भी संसार में न्यून हो जाए। मन्त्र के उत्तरार्ध में विवाहाभिलाषिणी स्त्रियों के मनोभावों का संक्षेप में वर्णन है, उसमें इशारे से पुरुष में पुरुषत्व के होने की आवश्यकता भी बतला दी। स्त्री क्यों और कैसे पुरुष को चाहती है, इसको 'उपप्रक्षे' तथा 'वृषणः' दो पद स्पष्ट कर रहे हैं। स्त्री सोच–समझकर पति को चुने, वह उसको **'दिवस्पथा'** ज्ञान के मार्ग से चाहे, अर्थात् स्त्री को अपने कर्त्तव्य तथा आवश्यकताओं एवं योग्यता का ज्ञान होना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत–कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

'वेद ही मनुष्य मात्र के परम आदरणीय व माननीय धर्म ग्रन्थ क्यों ?'

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

एक शब्द 'धर्म' है जिसका विपरीत व विरोधी अथवा विलोम शब्द अधर्म है। यह धर्म शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। यह शब्द हिन्दी भाषा में संस्कृत से ही आया है। अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी व संसार की अन्य भाषाओं में इसका प्रयोग नहीं हुआ है। वेद निर्विवाद रूप से संसार की सबसे पुरानी पुस्तक है। वेद से प्राचीन पुस्तक या मत-पन्थ-धर्म का अन्य कोई ग्रन्थ संसार में नहीं है। यदि वेद को समग्रता में जान लिया जाये तो सच्चे हृदय के विवेकशील व बुद्धिजीवी लोग यह स्वीकार करेंगे कि वेद मानव आचार संहिता वा धर्म शास्त्र है। धर्म मनुष्य जीवन में श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव को धारण करने को कहते हैं। मनुष्य को क्या धारण करना चाहिये ? मनुष्य के लिए सबसे अच्छी व आवश्यक यदि कोई वस्तु संसार में है तो वह **'सच्चे व अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव'** ही हैं। यह अच्छे गुण, कर्म व स्वभाव का धारण ही धर्म पालन कहलाता है। वेद के ऋषियों ने सृष्टि के आदि काल में मनुष्यों को **'सत्यं वद धर्मं चर'** का उपदेश किया था। इसका अर्थ है सत्य बोलो और धर्म पर चलो। इससे यह संकेत मिलता है कि सत्य बोलना व सत्य का ही आचरण करना धर्म कहलाता है। आजकल सभी पौराणिक मतों व अन्य मतों के आचार्यों द्वारा चलाये जा रहे मत, बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम, सब अपने मत को धर्म कहते हैं। अब प्रश्न यह है कि यदि इन सबकी सभी मान्यतायें व शिक्षायें सत्य बोलने व सत्य का पालन सहित उनका आचरण करने की बातें करती हैं, तभी यह धर्म हो सकती हैं अन्यथा यह धर्म नहीं हो सकतीं। यहां यह भी बता दें कि वेद मत को छोड़कर अन्य कोई भी मत, पन्थ एवं सम्प्रदाय शत-प्रतिशत सत्य विचारों व मान्यताओं पर आधारित नहीं है। जो मत व पन्थ सर्वांश में सत्य न हो, वह मत वा धर्म अधूरा व आंशिक धर्म ही हो सकता है समग्र धर्म नहीं, जैसा कि वेद पर आधारित वैदिक धर्म पूर्णता में सत्य धर्म है। वेद से इतर जितने भी मत संसार में हैं उनमें किसी में कम तो किसी में अधिक अवैदिक व असत्य मान्यताओं व परम्पराओं की भरमार है। उन मान्यताओं के रहते वह पूर्ण व सत्य मत नहीं कहला सकते और इसी आधार पर वह पूर्ण धर्म भी नहीं है। कपड़े में दाग लग जाये तो लोग उसे साफ करते हैं। इसी प्रकार से धर्म वा मत में असत्य मान्यतायें व कर्म भी कपड़े पर दाग के सामन हैं। यदि उन्हें अच्छे साबुन से रगड़-रगड़ कर धोकर साफ नहीं किया जायेगा तब तक वह पूर्ण व सच्चे धर्म की संज्ञा नहीं पा सकते। कहने के लिए कोई अपने मत की प्रशंसा किन्हीं भी शब्दों में क्यों न करे, परन्तु विवेकशील लोगों को सच्चाई व वास्तविक स्थिति का ज्ञान है। दुःख इसी बात का है कि कोई भी मताचार्य अपने मत की अशुद्धियों, बुराइयों व असत्य मान्यताओं की पहचान कर उसे हटाने का प्रयत्न नहीं करता क्योंकि उन्हें यह तथ्य भलीभांति ज्ञात है कि ऐसा करने पर उनके मत का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा। इसका अपवाद केवल व केवल वेद द्वारा प्रचलित व पालित सबसे प्राचीन, सृष्टि के आरम्भ से प्रचलित वैदिक धर्म है जो समस्त ज्ञात व अज्ञात सत्य मान्यताओं से सुभूषित धर्म है। इसी सत्य वैदिक धर्म का आर्यसमाज विगत 142 वर्षों से आन्दोलन के रूप में प्रचार करता चला आ रहा है।

अब सत्य व असत्य के स्वरूप पर विचार करते हैं। सत्य किसी पदार्थ के यथार्थ वा वास्तविक स्वरूप को कहते हैं। एक पदार्थ काले रंग का है तो उसे काला जानना व दूसरों को बताना ही सत्य होगा। इसके विपरीत यदि जानकारी के अभाव व अन्य किसी भी कारण से हम उसका सही रंग नहीं जानते व बताते हैं तो वह असत्य होता है। इसी प्रकार से ईश्वर, जीव व प्रकृति व अन्य सभी विषयों से संबंधित उनके सत्य व असत्य स्वरूप, पक्ष व गुण, कर्म, स्वभाव व चरित्र आदि हुआ करते हैं। ईश्वर का स्वरूप सच्चिदानन्द स्वरूप है। इसका अर्थ है कि ईश्वर सत्य, चित्त व आनन्द स्वरूप वाला है। सत्य का अर्थ है कि उसकी सत्ता यथार्थ है, वह काल्पनिक सत्ता वाला नहीं है। चेतन का अर्थ है कि वह जड़ के विपरीत ज्ञान व कर्म करने वाली तथा संवेदना, दया, करुणा, जीवों के कल्याण व हित को चाहने वाली सत्ता है। इसके साथ ईश्वर दिखाई न देने से निराकार, इस ब्रह्माण्ड की विशालता के कारण सर्वव्यापक, ज्ञानपूर्वक लोक लोकान्तर एवं मनुष्य आदि प्राणियों की सृष्टि करने वाला होने से ईश्वर सर्वज्ञ व सृष्टिकर्ता, हमारे कर्मों का नियामक होने से सर्वान्तर्यामी, सदा से विद्यमान रहने से अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजन्मा, अजर, अमर, अविनाशी व अनन्त सिद्ध है। दुखियों के दुख दूर करने के कारण व वृद्धावस्था के दुःखों से छुड़ा कर व सुखदायक मृत्यु देकर व उसके बाद कर्मानुसार पुनर्जन्म देकर व करुणामय व दयालु सिद्ध होता है। वह हमारे सभी कर्मों का साक्षी होकर हमें हमारे शुभाशुभ कर्मों का फल जन्म वा पुनर्जन्म के रूप में देकर एवं कर्मों का सुख-दुःख रूपी भोग कराने वाला होने से वह न्यायकारी, न्यायाधीश एवं हमारा राजा भी है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है अतः वह अपने काम स्वयं करता है, किसी की किंचित सहायता की उसको अपेक्षा नहीं है। उसका कभी जन्म व अवतार भी नहीं होता। सर्वव्यापक का अवतार लेना ऐसा है कि जैसे किसी सार्वभौमिक राजा को कोई व्यक्ति अपने समान व न्यून एक साधारण मनुष्य माने। यह जो वर्णन किया है वह ईश्वर का सत्यस्वरूप हैं। जिन ग्रन्थों में ईश्वर का ऐसा स्वरूप पाया जाता है, उनकी ऐसी बातें सत्य मानी जा सकती हैं और यदि किसी ग्रन्थ में ईश्वर को इसके विपरीत एकदेशी, ससीम, अवतार लेने वाला, रास-रंग करने वाला, मनमानी करने वाला व अपने मत के लोगों को सुख व स्वर्ग व दूसरे मतों के लोगों को दुःख, दोजख व नरक की आग में जलाने वाला बताने वाले मत व उनके ग्रन्थ में ईश्वर का ऐसा स्वरूप सत्य व तर्कसंगत मान्य नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार से जीवात्मा, जो कि सभी प्राणियों के शरीरों में विद्यमान है, वह सत्य, चित्त, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ, अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजर, अमर, ज्ञान प्राप्ति व कर्म करने की सामर्थ्य वाला, कर्मानुसार पूर्वजन्मों, इस जन्म व परजन्मों में आने जाने वाला होता है। प्रकृति एक जड़ पदार्थ है जो अपने मूल रूप में सत्य, रज व तम गुणों वाली कहलाती है। ईश्वर इसी से पूर्व कल्पों के अनुसार सृष्टि की रचना करता है जिसमें सभी सूर्य, चन्द्र, पृथिव्यां, अन्य लोक-लोकान्तर, ग्रह, उपग्रह, आकाश गंगाये, निहारिकायें एवं जीवात्मा के प्राणादियुक्त सूक्ष्म शरीर आदि आते हैं। यह सब ज्ञान वेदों में उपलब्ध है। सृष्टि से वेदों के ज्ञान का मिलान करने पर यह सत्य सिद्ध होता है। अन्य किसी मत में सृष्टि विषयक इन तथ्यों का पूर्ण सत्य उद्घाटन नहीं हुआ है जिससे यह सिद्ध होता हो कि वेदेतर सभी मत व मतान्तर अल्पज्ञ मनुष्यों के द्वारा उद्घाटित व प्रचलित हैं जबकि वेद सृष्टिकर्ता ईश्वर की ज्ञान व विज्ञान से युक्त कृति है। सत्यार्थ प्रकाश का ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां तथा चौदहवां समुल्लास पढ़कर भी इन सभी तथ्यों को प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

वेदों की उत्पत्ति और उनके विषय में कुछ तथ्यों पर भी दृष्टिपात कर लेते हैं। सृष्टि के आरम्भ काल में ईश्वर ने मनुष्य आदि प्राणियों को अमैथुनी सृष्टि अर्थात् बिना माता-पिता के संसर्ग हुए उत्पन्न किया था। यह सभी

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

आचारः परमो धर्मः

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने स्वलिखित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य जीवन से सम्बन्धित अनेक दृष्टिकोणों पर सार्थक विवेचन किया है। ईश्वर का स्वरूप क्या है, शिक्षा पद्धति कैसी होनी चहिए, माता-पिता का सन्तान के प्रति क्या कर्त्तव्य है, मनुष्य मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है? इसी के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के दशमें समुल्लास में आचार एवं अनाचार विषय को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि-

अब जो धर्मयुक्त कामों का आचरण, सुशीलता, सत्पुरूषों का संग और सद्विद्या के ग्रहण में रूचि आदि आचार और इनके विपरीत अनाचार कहाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी मनु महाराज द्वारा रचित मनुस्मृति के श्लोकों को उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि-

मनुष्यों को सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिसका सेवन रागद्वेषरहित निद्वान् लोग नित्य करें, जिसको हृदय अर्थात् आत्मा से सत्य कर्त्तव्य जानें, वही धर्म माननीय और करणीय है।। १।। क्योंकि इस संसार में अत्यन्त कामात्मता और निष्कामता श्रेष्ठ नहीं है। वेदार्थज्ञान और वेदोक्त कर्म ये सब कामना ही से सिद्ध होते हैं।। २।। जो कोई कहे कि मैं निरिच्छ एवं निष्काम हूं वा हो जाऊँ तो वह कभी नहीं हो सकता क्योंकि सब काम अर्थात् यज्ञ, सत्यभाषणादि व्रत, यम नियमरूपी धर्म आदि संकल्प ही से बनते हैं।। ३।। क्योंकि जो-जो हस्त, पाद, नेत्र, मन, आदि चलाए जाते हैं वे सब कामना ही से चलते हैं। जो इच्छा न हो तो आंख का खोलना और मीचना भी नहीं हो सकता।। ४।। इसलिए सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, सत्पुरूषों का आचार और जिस-जिस कर्म में अपनी आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, शंका, लज्जा, जिस में न हो उन कर्मों का सेवन करना उचित है। देखो! जब कोई मिथ्याभाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसके आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है इसलिए वह कर्म करने योग्य नहीं।। ५।।

मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र, वेद, सत्पुरूषों का आचार, अपने आत्मा के अविरूद्ध अच्छे प्रकार विचार कर ज्ञान नेत्र करके श्रुति प्रमाण से स्वात्मानूकूल धर्म में प्रवेश करे।। ६।। क्योंकि जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और जो वेद से अविरूद्ध स्मृत्युक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मर के सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है।। ७।। श्रुति वेद और स्मृति धर्मशास्त्र को कहते हैं। इन से सब कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय करना चाहिए।। ८।। जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्तग्रन्थों का अपमान करे उसको श्रेष्ठ लोग जातिबाह्य कर दें। क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहाता है।। ९।। इसलिए वेद, स्मृति, सत्पुरूषों का आचार और अपने आत्मा के ज्ञान से अविरूद्ध प्रियाचरण, ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इन्हीं से धर्म लक्षित होता है।। १०।। परन्तु जो द्रव्यों का लोभ और काम अर्थात् विषयसेवा में फंसा हुआ नहीं होता उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करें उनके लिए वेद ही परम प्रमाण है।। ११।।

इसी विषय को और स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती आगे लिखते हैं कि मनुष्य का सही मुख्य आचार है कि जो इन्द्रियां चित्त का हरण करने वाले विषयों में प्रवृत्त कराती हैं उनको रोकने में प्रयत्न करें। जैसे घोड़ों को सारथि रोक कर शुद्ध मार्ग में चलाता है इस प्रकार इन को अपने वश में करके अधर्ममार्ग से हटा के धर्ममार्ग में सदा चलाया करे, क्योंकि इन्द्रियों को विषयासक्ति और अधर्म में चलाने से मनुष्य निश्चित दोष को प्राप्त होता है और जब इनको जीतकर धर्म में चलाता है तभी अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त होता है। यह निश्चय है कि जैसे अग्नि में इन्धन और घी ड़ालने से बढ़ता जाता है वैसे ही कामों के उपभोग से काम शान्त कभी नहीं होता किन्तु बढ़ता ही जाता है। इसलिए मनुष्य को विषयासक्त कभी न होना चाहिए। जो अजितेन्द्रिय पुरूष है उसको विप्रदुष्ट कहते हैं। उसके करने से न वेदज्ञान, न त्याग, न यज्ञ, न नियम, और न धर्माचरण सिद्धि को प्राप्त होते हैं किन्तु ये सब जितेन्द्रिय धार्मिक जन को सिद्ध होते हैं। इसलिए पांच कर्मेन्द्रिय, पांच ज्ञानेन्द्रिय और ग्याहरवें मन को अपने वश में करके युक्ताहार विहार योग से शरीर की रक्षा करता हुआ सब अर्थों को सिद्ध करे।

जितेन्द्रिय उसको कहते हैं जो स्तुति सुन के हर्ष और निन्दा सुन के शोक, अच्छा स्पर्श करके सुख और दुष्ट स्पर्श से दुःख, सुन्दर रूप देख के प्रसन्न और दुष्ट रूप देख के अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दुःखित, सुगन्ध में रूचि और दुर्गन्ध में अरूचि नहीं करता है। कभी बिना पूछे वा अन्याय से पूछने वाले को जो कपट से पूछता हो उसको उत्तर न देवे। उनके सामने बुद्धिमान जड़ के समान रहे। हां जो निष्कपट और जिज्ञासु हों उनको बिना पूछे भी उपदेश करे। एक धन, दूसरे बन्धु कुटुम्ब कुल, तीसरी अवस्था, चौथा उत्तम कर्म और पांचवी श्रेष्ठ विद्या ये पांच मान्य के स्थान हैं। परन्तु धन से उत्तम बन्धु, बन्धु से अधिक अवस्था, अवस्था से श्रेष्ठ कर्म और कर्म से पवित्र विद्या वाले उत्तरोतर अधिक माननीय हैं। क्योंकि चाहे सौ वर्ष का भी हो परन्तु जो विद्या विज्ञानरहित है वह बालक और जो विद्या विज्ञान का दाता है उस बालक को भी वृद्ध मानना चाहिए। क्योंकि सब शास्त्र आप्त विद्वान अज्ञानी को बालक और ज्ञानी को पिता कहते हैं। अधिक वर्षों के बीतने, श्वेत बाल के होने, अधिक धन से और बड़े कुटुम्ब के होने से वृद्ध नहीं होता। किन्तु ऋषि महात्माओं का यही निश्चय है कि जो हमारे बीच में विद्या विज्ञान में अधिक है वही वृद्ध पुरूष कहाता है। ब्राह्मण ज्ञान से, क्षत्रिय बल से, वैश्य धन धान्य से और शूद्र जन्म अर्थात् अधिक आयु से वृद्ध होता है। इसलिए विद्या पढ़, विद्वान् धर्मात्मा होकर निर्वैरता से सब प्राणियों के कल्याण का उपदेश करे और उपदेश में वाणी मधुर और कोमल बोले। जो सत्योपदेश से धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश करते हैं वे पुरूष धन्य हैं। नित्य स्नान, वस्त्र, अन्न, पान, स्थान सब शुद्ध रखें क्योंकि इनके शुद्ध होने में चित्त की शुद्धि और आरोग्यता प्राप्त होकर पुरूषार्थ बढ़ता है। **आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च।** अर्थात् जो सत्यभाषणादि कर्मों का आचरण करना है वही वेद और स्मृति में कहा हुआ आचार है। अतः मनुष्य को वेद एवं स्मृति प्रतिपादित आचार का पालन करना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में जिस आचार-अनाचार विषय का उल्लेख किया है वह आर्यों के जीवन का आवश्यक अंग होना चाहिए। आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने जीवन में सदाचार के नियमों का पालन करें तथा अपने जीवन को शुद्ध एवं पवित्र बनाएं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

अदिति के सम्पर्क से आनन्दित हों

-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद चलभाष ०९३५४७४५४२६

मानव जीवन में जो कुछ भी आनन्द या खुशी है, उस सुख का आधार अदिति ही है। मानव सदा सुख चाहता है, खुशी व प्रसन्नता चाहता है। इसलिए इसे निरन्तर अदिती के सम्पर्क में रहना आवश्यक है। यह वह तथ्य है, जिस पर यजुर्वेद का १४वां मन्त्र इस प्रकार प्रकाश डाल रहा है :

शर्मास्यवधूतं रक्षोऽवधूताऽ-अरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु।

अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्या-स्त्वग्वेतु।।

इस मन्त्र में छः बिन्दुओं पर विचार करते हुए प्रभु ने उपदेश किया है कि :

१. मानव जीवन आनन्द से भरपूर-जब हम अपने अन्दर व बाहर के सब कलुष, सब बुराईयां, सब गन्दगी धो कर शुद्ध व पवित्र हो जाते हैं तो हम प्रभु की निकटता पाने के अधिकारी हो जाते हैं। जिस प्राणी को प्रभु के निकट आसन लगाने का अधिकार मिल जाता है, उस प्राणी का जीवन आनन्द से भर जाता है। अब सब ओर उसे आनन्द ही आनन्द, सुख ही सुख, खुशी ही खुशी मिलती है। वह प्रतिक्षण आनन्द में ही विचरण करता है।

जब प्राणी प्रयत्न पूर्वक अपने अन्दर व बाहर के शत्रुओं को पराजित कर पवित्र हो जाता है तो उसका जीवन आनन्दमय हो जाता है। इस आनन्द को, इस खुशी को पाने के लिए ही हम अपनी भोगमयी प्रवृत्ति को बदल कर निःस्वार्थ प्रवृत्ति में विचरण करने के लिए सदा अपने अन्दर के शत्रुओं से संघर्ष करते रहते हैं। हमारी पवित्रता के कारण हमारे अन्दर की राक्षसी तथा भोगवादी प्रवृतियां कम्पित होती हैं, भयभीत होती है और हमारे शरीर को त्याग कर चली जाती हैं। इस प्रकार हम अपने अन्दर की राक्षसी प्रवृत्तियों से चल रहे युद्द में विजयी होते हैं। यह प्रवृत्तियां पवित्र शरीर में रह ही नहीं सकतीं। जिस प्राणी को प्रभु की निकटता का अधिकार मिल जाता है, उसके पास यह प्रवृत्तियां टिक ही नहीं सकतीं। इसलिए ज्यों ही हम पवित्रता को प्राप्त होते हैं, यह बुराईयां स्वयं ही भाग जाती हैं। यह बुरी प्रवृत्तियां हमें निर्धन बनाने वाली होती है किन्तु इन से छूट कर हम प्रभु की निकटता के कारण अपार धन एश्वर्य के भण्डारी बन जाते हैं।

२. आत्म सम्मान के लिए दिव्यगुणों-हे प्राणी ! जब तू अपने अन्दर के शत्रुओं का नाश कर लेता है, अपनी राक्षसी प्रवृत्तियों को नष्ट कर लेता है, तब तू अदिति की समीपता पाने का अधिकारी हो जाता है। अदिति समयक रूप से तुझे जान लेती है। इस प्रकार न केवल तू अदिति से अच्छी प्रकाश से, भली प्रकार से परिचय प्राप्त कर सके बल्कि यह अदिति भी तेरे से परिचय प्राप्त कर ले, तुझे भी अच्छे से जान ले। इस मेल-जोल के कारण तेरी अदिति से घनिष्टता बन जावे, निकटता बन जावे। दोनों सहचर बन जावें।

हे प्राणी ! परमपिता परमात्मा ने तुझे अदिति की गोद दी है, उसकी गोद में तुझे बैठा दिया है। जब अदिति की गोद तुझे प्राप्त हो गयी है तो तू कभी अधीन नहीं हो सकता, दूसरों के आगे हाथ फ़ैलाने की अब तुझे आवश्यकता ही नहीं है। अब तू अकृपण हो गया है अर्थात् अब तू निर्धन नहीं है। सब प्रकार के सुख सुविधाएं इस अदिति के कारण तुझे मिल गई हैं। जब तू किसी के आगे हाथ फ़ैलाने की आवश्यकता ही नहीं समझेगा तो तेरे अन्दर किसी प्रकार की हीनता की भावना पैदा नहीं होगी, यह सम्भव ही नहीं हो सकता। अतः तू अब आत्म-सम्मान वाला बन गया है। इस कारण ही तेरे अन्दर दिव्य गुणों ने प्रवेश कर लिया है। अब तो तेरे लिए एक ही कार्य बचा है, वह यह कि जो दिव्य गुण तुझे मिले हैं, इन्हें बढ़ाने का निरंतर यत्न कर।

३. अब तू सम्मानीय बन गया है-हे जीव ! जब तूने दिव्य-गुणों को प्राप्त कर लिया है। इन दिव्य गुणों को अपने अन्दर और अधिक विकसित करने में लगा है तो तू कभी भी धर्म के मार्ग पर चलते हुए भयभीत नहीं हो सकता, निरन्तर धर्म-मार्ग पर आगे बढ़ने का ही यत्न करेगा, प्रयास करेगा। धर्म के मार्ग पर जाने वालों का यह संसार सदा सम्मान करता है। इस प्रकार सम्मानित हो कर तू सबका आदरणीय बन जावेगा अर्थात् सब लोग तुझे आदर व सत्कार देने वाले बन जावेंगे।

४. शाकाहारी बन-जो प्राणी मांसाहारी होता है, उसमें अनेक प्रकार की बुराईयां आ जाती हैं, राक्षसी प्रवृत्तियां आ जाती है किन्तु तेरा जीवन तो वनस्पतियों पर आधारित है, इस कारण तेरे अन्दर यह सब बुराईयां तो आने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। तेरे इस शरीर को आनन्दमय कोष कह सकते हैं। इस का कारण है कि तू वनस्पतियों पर ही निर्भर है। तूने मस-मदिरा आदि का सेवन नहीं किया है। इस कारण तू शुद्ध और पवित्र है। कोई भी विकृत प्रवृति तेरे अन्दर प्रवेश ही नहीं कर सकती। इसे बनाये रखने के लिए सदा शाकाहारी भोजन पर ही निर्भर रह।

५. ज्ञान विज्ञान को ग्रहण कर-हे जीव ! तू पवित्र है तथा इस पवित्रता को बनाये रखने के लिए तू सदा वेद की पवित्र वाणियों का स्वाध्याय करता रहता है। वेद के इस स्वाध्याय से तेरे अन्दर की पवित्रता, दिव्यता निरन्तर बढ़ती ही चली जा रही है। इसलिए तू सदा अपने अन्दर सब प्रकार के ज्ञान तथा विज्ञान को बढ़ाता ही चला जाता है।

६. सदा अधीन देवमाता के सम्पर्क में रह-जब हम ने अपने अन्दर व बाहर को शुद्ध पवित्र कर देवमाता अदिति की गोद में बैठने का अधिकार पा लिया है तो फ़िर हमें और क्या चाहिये अर्थात् कुछ भी नहीं। अदिति की गोद में बैठकर हम विशाल मूल वाले बन गये हैं। इसका भाव यह है कि हम ने अपनी उन्नति के आधार को व्यापक बना लिया है, दृढ़ बना लिया है। हे जीव ! तूने अपने शरीर, अपने मन तथा अपने मस्तिष्क सब के विकास का सदा ध्यान रखा है। इस कारण तेरा शरीर, मन व बुद्धि पवित्र व शुद्ध हो गयी है। अब तुझे और अधिक ज्ञान देने की, उपदेश देने की मैं आवश्यकता नहीं समझता। बस अन्त में एक बार फ़िर तुझे स्मरण मात्र ही दिलाता हूं कि तेरे साथ अदिति का सम्पर्क, अदिति की गोद सदा बनी रहे। इस प्रकार तू सदा अदीन देवमाता अदिति के सम्पर्क में रहते हुए अदीन ही बना रह।

स्वर्गीय श्रीमति सुदर्शना देवी विज की पुण्यतिथि मनाई गई

दिनाँक 7/5/17 रविवार को श्रीमति सुदर्शना विज धर्म पत्नी स्वर्गीय श्री बलदेव राज जी विज जी की पुण्य तिथि आर्य समाज मन्दिर दीनानगर में मनाई गई। सबसे पहले शास्त्री विजय कुमार जी ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ करवाया जिसमें श्री ब्रह्म देव विज, श्री अरुण विज, श्री राजेन्द्र विज सपत्नीक यजमान बने। यज्ञ के पश्चात् विजय शास्त्री जी ने यजमानों को आशीर्वाद दिया, तत्पश्चात् शास्त्री जी की बेटी कुमारी साक्षी आर्य ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर आधारित बहुत ही सुन्दर भजन सुनाया। उसके बाद श्री राजेन्द्र विज जी की बेटी विभा आनन्द ने मां के ऊपर एक कविता पड़ी जिससे बैठे हुए सभी श्रोतागण भावुक हो गए एवं सभी की आँखों में आँसू छलक पड़े। जालन्धर से विशेष रूप से पधारे श्री राजेश जी ने अपने दो भजन सुना कर सभी को भाव विभोर कर दिया। अन्त में प्रिंसीपल श्री गन्धर्वराज महाजन एवं आर्य समाज के प्रधान श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री जी ने भी श्रीमति सुदर्शना विज जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। मंच संचालन सचिव रमेश महाजन ने किया। इन कार्यक्रम में शहर के लगभग सभी गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। श्री राजेन्द्र विज ने आए हुए सभी महानुभावों का विज परिवार की ओर से धन्यवाद किया। परिवार की ओर से ऋषिलंगर का प्रबन्ध किया गया।

-रमेश महाजन मन्त्री आर्यसमाज दीनानगर

''ईश्वर और वेदों सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर''

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्दि राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

प्रश्नः सूर्य, चन्द्र, पर्वत, समुद्र आदि संसार की वस्तुओं को किसने बनाया है ?

उत्तरः ईश्वर ने।

प्रश्नः क्या इन चीजों को कोई मनुष्य व अन्य प्राणी बना सकता है?

उत्तरः कभी नहीं। किसी भी प्राणी में यह शक्ति नहीं कि इन आश्चर्यजनक चीजों को बना सके।

प्रश्नः ईश्वर का रूप कैसा है, और वह कहाँ रहता है, क्या हम उसे आँखों से देख सकते है?

उत्तर-ईश्वर सब जगह व्यापक है, कोई ऐसी चीज़ व ऐसी जगह नहीं जिसके अन्दर वह न हो, उसका कोई रूप और शरीर नहीं है, इसलिए हम उसे कभी नहीं देख सकते।

प्रश्नः क्या ईश्वर हमारे अन्दर भी है।

उत्तरः हाँ ! ईश्वर हमारे अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे चारों ओर है। हमें इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए और सदा याद रखना चाहिए।

प्रश्नः इस बात को याद रखने से क्या लाभ है।

उत्तरः यदि हम इस बात को सदा याद रखें कि परमेश्वर सब जगह है और सब कुछ जानता है तो हम कभी बुरे काम नहीं कर सकते। कभी बुरा विचार तक मन में नहीं ला सकते। जब ईश्वर-इस सारे संसार का राजा-हमें सब जगह देखने वाला है, तो हम कैसे झूठ बोल सकते हैं ? कैसे चोरी कर सकते हैं ? कैसे धोखा दे सकते हैं ? और कैसे दुराचार कर सकते है ? इतना ही नहीं, बल्कि इन बुरे कामों के करने का विचार तक कैसे मन में ला सकते हैं ? इसलिए धर्म की सबसे बड़ी शिक्षा यही है कि ईश्वर को हम सब जगह व्यापक मानकर बुरे कामों से सदा दूर रहें। इसीलिए वेद में बताया है।

''ईशावस्यमिदं सर्व यत्किच जगत्यां जगत्'' यजु०४०।१

अर्थात् इस सारे संसार में सब पदार्थों में ईश्वर व्यापक है।

प्रश्नः ईश्वर कितने हैं ?

उत्तरः ईश्वर एक ही है, जो सब जगह व्यापक, सब कुछ जानने वाला और सर्वशक्तिमान है। वेद में उपदेश : ''य एक इत् तमुष्टुहि'' ऋग्वेद ६।४५।६

जो परमेश्वर एक ही है उसी की हे मनुष्य ! तू सदा स्तुति व उपासना कर। उपनिषद् का वचन भी याद रखो-

एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा। श्वेता-श्वतर उप० अर्थः परमेश्वर एक ही है, वह सब प्राणियों के अन्दर छिपा हुआ है, वह सर्वव्यापक और सब प्राणियों की आत्मा के भीतर विद्यमान है।

प्रश्नः वेद किसको कहते हैं?

उत्तरः वेद शब्द का अर्थ-ज्ञान है।

प्रश्नः वेद कितने हैं और उनमें क्या बतलाया गया है।

उत्तरः वेद चार हैं, जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। मनुष्यों को किस तरह के काम करने चाहिए, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति कैसे हो सकती है, तथा संसार में शान्ति कैसे रह सकती है, ईश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए, इत्यादि सब बातें वेदों में बताई गई हैं। उनसे सबको लाभ कैसे पहुँच सकता है ? यह भी बताया है।

प्रश्नः वेदों का ज्ञान किसने और क्यों दिया ?

उत्तरः वेदों का ज्ञान ईश्वर ने दिया, जो सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानने वाला है। उसने यह ज्ञान इसलिए दिया कि सबको सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त हो सके। ईश्वर माता-पिता के समान हम सब पर दया करने वाला है। जैसे माता-पिता बच्चों की भलाई के लिए उन्हें अच्छी बातें सिखाते हैं, वैसे ही हम सबके परम् पिता और दयालु माता ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए वेदों का ज्ञान दिया, क्योंकि वह हम सबकी भलाई चाहता है।

प्रश्नः वेदों का ज्ञान ईश्वर ने कब दिया ?

उत्तरः यह ज्ञान ईश्वर ने मनुष्य सृष्टि के आरम्भ में दिया। यदि बाद में देता तो पूर्व-सृष्टि उसके लाभ से वंचित रह जाती।

प्रश्नः वेदों का ज्ञान ईश्वर ने क्यों और किसको दिया ?

उत्तरः वेदों का ज्ञान ईश्वर ने मनुष्य-सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों को दिया। क्योंकि वे उस ज्ञान के बिना कुछ नहीं सीख सकते थे और न सिखा सकते थे। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो सिखाने से सीखता है। जब तक हमें कोई सिखलाने वाला न हो तब तक हम कुछ भी लिखना-पढ़ना नहीं सीख सकते। सृष्टि के आरम्भ में सिवाय ईश्वर के कौन मनुष्यों को उपदेश देता। हमें क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए, हमने वेदों से ही सीखा है। जिनको मनुष्य-दृष्टि के आरम्भ में जिन चार ऋषियों को ईश्वर ने वेद-ज्ञान दिया उनके नाम-अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा थे।

प्रश्नः क्या ईश्वर ने कागज, कलम और स्याही ले कर लिख दिया अथवा वह वेद-ज्ञान उन्हें कैसे दिया ?

उत्तरः ईश्वर सबके अन्दर व्यापक है। उन ऋषियों के हृदय पवित्र थे। ईश्वर ने उनके हृदयों में वेदों का ज्ञान भर दिया। ईश्वर, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान होने के कारण न उसे कागज कलम, स्याही की जरूरत है और न मुँह से बोलने की। ब्रह्म, हृदयों में प्रेरणा देना ज्ञान भरने के लिए पर्याप्त है।

प्रश्नः क्या ईश्वर का ज्ञान बदलता रहता है।

उत्तरः नहीं ! ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस अर्थात् ठीक वैसा हो बना रहता है। उसे अपना ज्ञान बदलने की कोई जरूरत नहीं होती।

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः।

ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय चारणाय च स्वाय।।

यजु० २६।२

इसका अर्थ यह है कि सबकी भलाई करने वाले वेद ज्ञान को मैंने सारे मनुष्यों के कल्याण के लिए दिया है। इसलिए महर्षि दयानन्द की इस आज्ञा को कभी न भूलो और सदा वेद का स्वाध्याय किया करो-''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदों का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम्धर्म है।

यह लेख मैंने ''वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी'' नामक लघु पुस्तिका से उद्धृत किया है। मेरा उद्देश्य प्रत्येक विज्ञ पाठक को ईश्वर और वेदों सम्बन्धी अधिक से अधिक जानकारी बन सके और अपने ज्ञान को अधिक से अधिक बढ़ाकर जीवन में सुख व शान्ति प्राप्त कर सके, इसलिए लिखा है। कृपया इसका पूरा लाभ उठावें।

स्वर्ण पदक प्राप्त कर गुरुकुल का गौरव बढ़ाया

आज से 50 वर्ष पूर्व उड़ीसा के नवापारा जिले में गुरुकुल आश्रम आमसेना की स्थापना 1968 ई. में आर्य जगत् के तपस्वी, सन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने हरियाणा से आकर की थी। अब तक इस संस्था से हजारों छात्र-छात्राएं स्नातक बन चुके है बहुत सारे स्नातक शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुके है।

इस वर्ष भी इस परम्परा को गौरव प्रदान किया गुरुकुल के निम्न होनहार मेधावी छात्रों ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त करके गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है। यहां व्याकरण, दर्शन, साहित्य आदि विभिन्न विषयों में प्रथमा से लेकर एम. ए. (आचार्य) तक विद्याध्ययन की पूर्णतः निःशुल्क व्यवस्था एक तपस्वी, सन्यासी द्वारा की जा रही है। इसी का प्रतिफल है कि आचार्य मनुदेव, (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य), ब्र. श्री निरंजन आर्य (व्याकरणाचार्य), ब्र. श्री राकेश आर्य (व्याकरणाचार्य), आदर्श कन्या गुरुकुल की आचार्य सुश्री पुष्पा जी (वेदाचार्य), ममता जी (व्याकरणाचार्य), गीता जी (साहित्याचार्य) आदि को हरियाणा के महामहिम राज्यपाल ने अपने कर कमलों से स्वर्ण पदक प्रदान करके सम्मानित किया है। इन होनहार छात्रों के गुरुकल में पहुँचने पर भव्य स्वागत किया गया।

पृष्ठ 2 का शेष-'वेद ही मनुष्य मात्र के ...

स्त्री व पुरुष युवावस्था में उत्पन्न किये गये थे। यदि ईश्वर इन्हें शैशवास्था में उत्पन्न करता तो इनके पालन करने के लिए माता-पिता की आवश्यकता होती और यदि इन्हें वृद्ध बनाता तो इनसे मैथुनी सृष्टि न चल पाती और वहीं समाप्त हो जाती। अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न इन युवा स्त्री पुरुषों को बोलने के लिए भाषा और पदार्थों के नाम व क्रिया पद आदि का ज्ञान चाहिये था। किसने किससे कैसा व्यवहार करना होता है, यह ज्ञान भी इन्हें बताना आवश्यक था। भूख लगने पर फल, गोदुग्ध व वनस्पतियों का सेवन करना है और प्यास लगने पर वहां निकट के स्वच्छ जलाशय व नदी का जल पीना है, यह ज्ञान भी सभी मनुष्यों को बताना था। इन सबकी पूर्ति ईश्वर ने इन ऋषियों को चार वेदों का ज्ञान देकर पूरी की। जिसे ऋग्वेद का ज्ञान दिया वह अग्नि ऋषि कहलाये, जिसे यजुर्वेद का ज्ञान दिया वह वायु ऋषि, जिसे सामवेद का ज्ञान दिया वह आदित्य ऋषि और जिसे अथर्ववेद का ज्ञान दिया वह अंगिरा ऋषि जाने जाते हैं। यह वर्णन वैदिक वांग्मय के अन्तर्गत **'ब्राह्मण ग्रन्थों'** में वर्णित हैं। इन चार ऋषियों को ईश्वर ने इनकी आत्मा में अपने जीवस्थ वा अन्तर्यामीस्वरूप से प्रेरणा द्वारा ज्ञान दिया था। चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के विषय क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान है। सभी वेदों में ईश्वर व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना का ज्ञान भी दिया गया है जिससे मनुष्य सृष्टिकर्ता के ज्ञान व उसकी उपासना में भ्रमित न हो। इन चार ऋषियों ने ईश्वर की प्रेरणा से चार वेदों का ज्ञान एक एक करके ब्रह्मा जी को दिया। इन पांच ऋषियों ने अन्य युवा स्त्री व पुरुषों को उपदेश व बोलकर ज्ञान कराया। यह उपदेश पद्धति से ज्ञान देने की परम्परा का आरम्भ था जो अद्यावधि प्रचलित है। ऋषि दयानन्द ने भी गुरु विरजानन्द जी से वेद-व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान से वेदों की संहितायें प्राप्त करने के अनन्तर चार वेदों का व्याकरण व अन्य शास्त्रों की सहायता से आलोचन किया और बाद में वेदभाष्य का कार्य आरम्भ किया जिससे साधारण मनुष्य भी लाभान्वित हो सके। हमें लगता है कि लोकभाषा हिन्दी सहित संस्कृत में वेदों के ज्ञान-विज्ञान युक्त प्रमाणिक भाष्य का कार्य सृष्टि के इतिहास में ऋषि दयानन्द जी ने ही पहली बार किया। इसका सुपरिणाम है कि आज एक साक्षर व्यक्ति भी वेदों के गम्भीर रहस्यों को जानता है। वेदभाष्य का अंग्रेजी अनुवाद भी आज उपलब्ध है। आज हम व देश-विदेश के लाखों लोग ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी विद्वानों के वेदभाष्यों से लाभान्वित हो रहे हैं। यह ऋषि दयानन्द का मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार है। यदि ऐसा न होता तो हमारा व लाखों करोड़ों मनुष्यों का जीवन उन्नत न होता और न ही परजन्म सुधरता। ऋषि दयानन्द जी के सम्पूर्ण मानव जाति पर अन्य अनेक उपकार हैं जो लेख के विषय से भिन्न होने के कारण यहां उन्हें उल्लेखित नहीं किया जा रहा है। तथापित संक्षेप में इतना तो बता देते हैं कि ऋषि दयानन्द ने वेदानुसार ईश्वरीय उपासना की परिणामोत्पाक सत्य विधि सिखाई। अवतारवाद, मूर्तिपूजा, व्यक्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जाति व्यवस्था आदि का खण्डन किया। देशवासियों को देश को आजाद करने की प्रेरणा की। उन्होंने जन्म से सभी को शूद्र बताया। स्वामी दयानन्द जी ने विद्या आदि संस्कारों तथा आचरण के आधार पर कर्मणा ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य वर्णों को मान्यता दी। वेद अनुसार अच्छे कर्मों को करके शूद्र ब्राह्मण बन सकता है और ब्राह्मण नीच कर्म करके शूद्र हो जाता है। बाल विवाह व बेमेल विवाह को उन्होंने अनुचित ठहराया, गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार विवाह का समर्थन एवं छोटी आयु की विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार दिया। उन्होंने स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार भी दिया। ऐसे अनेकानेक उपकार ऋषि दयानन्द के मानव जाति पर हैं।

वेद ही संसार के सभी मनुष्यों के आदरणीय एवं माननीय ग्रन्थ हैं। मत-मतान्तरों के ग्रन्थों में वैसा निर्भ्रांत ज्ञान नहीं है जैसा कि वेदों में है। मत-मतान्तरों के ग्रन्थों में मिथ्या मान्यताओं व विश्वासों की भरमार है जबकि वेद इन अज्ञानमूलक मान्यताओं से मुक्त है। इन मत-मतान्तरों के कारण ही संसार में अन्धकार फैला और लोग ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले नास्तिक बने हैं। मत-मतान्तरों की ईश्वर विषयक मान्यतायें बुद्धिमान व विवेकशील मनुष्यों में भ्रम उत्पन्न करती हैं तथा सभी मत-मतान्तर ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को न जानने व बताने के कारण वैज्ञानिक बुद्धिवाले मनुष्यों को सन्तुष्ट नहीं कर पाते। इसलिए संसार का एक बहुत बड़ा बौद्धिक वर्ग नास्तिक बन गया है। यूरोप व अन्य देशों में उत्पन्न हुए कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने वहां प्रचलित नाना मत-मतान्तरों की ईश्वर विषयक मान्यताओं से सन्तुष्ट न होने के कारण संसार में ईश्वर के विद्यमान न होने की घोषणा की। इसका दोष अविद्यायुक्त सभी मत-मतान्तरों पर ही है। यह मत-मतान्तरों की अक्षमता है। वैदिक धर्म में ईश्वर का बुद्धिसंगत एवं सृष्टि में विद्यमान ईश्वर के गुणों के अनुरूप स्वरूप का वर्णन हुआ है। वैदिक विचारधारा से जुड़े सभी विद्वान व वैज्ञानिक ईश्वर को मानते व इसका युक्ति एवं तर्क आदि प्रमाणों से समर्थन एवं प्रचार करते हैं। हमारा विचार है कि यदि यूरोप आदि सभी देशों के वैज्ञानिक वेद वा ऋषि दयानन्द द्वारा उद्घाटित ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाणों पर एक बार दृष्टिपात कर लें तो वह अवश्य ईश्वर के अस्तित्व को न केवल स्वीकार ही कर लेंगे अपितु ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना भी आरम्भ कर देंगे। यदि आज ऋषि दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि लोग जीवित होते तो यह कार्य पूर्ण हो गया होता। इसके लिए हमारे विद्वानों को ईश्वर के समर्थन में प्रामाणिक लेखन कर उसे वैज्ञानिकों तक पहुंचाना चाहिये। वेद आज के भी और भविष्य के भी सभी मनुष्यो के प्रमाणिक एकमात्र धर्म ग्रन्थ हैं। ऋषि दयानन्द के शब्दों में **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'** विवेक पूर्वक वेदों के प्रचार द्वारा जितनी वेदों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी उतना ही संसार से अज्ञान मिटेगा और देश व विश्व में शान्ति में वृद्धि होगी।

बेटी सप्ताह मनाया गया

आज समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग)फिरोजपुर में 14 मई को बेटी सप्ताह वैदिक रीति से मनाया गया। सबसे पहले छोटी-छोटी बेटियों ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया जो कि उनकी ज़िन्दगी का पहला यज्ञ था यजमान पद पर बेटी नदंनी तथा बेटी संजना बैठी मदर डे पर पं० शिवा शास्त्री जी ने बहुत प्यार से बताया कि मां की ज़िन्दगी को खुशियां से भरकर रखो मां को माँ समझो घर की नौकरानी मत समझो। आज अक्सर देखने को मिलता है कि जब मां बेटे की शादी कर देती है तो उसे सुख मिलने की बजाये दुख मिलता है। कुछेक घर ऐसे है जहां मां को प्यार मिलता है यू ही समझ लीजिये वहाँ भगवान वास करता है आप भगवान की पूजा करते है परन्तु भगवान को देख नहीं सकते तो मेरे विचारों में भगवान आपके घर में ही है वह है आपकी माँ। जो इन्सान सुबह उठकर तथा राज को सोते समय माँ-बाप के चरण स्पर्श करते है वह रात-दिन खुश रहते है तथा वह खुशकिस्मत है यदि आप आने वाली पीढ़ी को कुछ सिखाना चाहते है तो उन्हें दिखाओ मां-बाप की सेवा कैसे करनी है। वृद्ध आश्रम को मत भरो यदि जीवन की सुखी रखना है।

उसके बाद डॉ. सुदेश गोयल ने भी बहुत सुन्दर शब्दो में उपनिषद में माध्यम से प्रवचन दिये उन्होंने छोटी-छोटी बाते बताई जिससे करने से तथा जिसे अपनाने से हमारे मां-बाप ही सुखी नहीं रहेगे बल्कि हमें भी आनन्द मिलेगा हम बड़ो का सम्मान करना चाहिये। मां का दिया आर्शीवाद कभी खाली नहीं जाता वह खुशकिस्मत है जिन्हें मां-बाप की सेवा करने का मौका मिलता है।

अन्त में शान्ति पाठ करके सभी को प्रसाद वितरित किया गया। श्री डी आर गोयल ने विश्वास दिलाया हम ऐसे कार्यक्रम करते रहेगे जिससे आने वाली पीढ़ी में सुधार आये। इस मौके पर श्री हेमन्त स्याल जी ने 21000/- का चैक तथा गुप्त दान 31000/- श्री विजय मल्होत्रा जी ने किसी सदस्य का दिया जिसका नाम गुप्त रखा गया। भवन निर्माण के लिये पैसे दिये गये। **-विपन धवन (उपप्रधान)**

"स्त्री का अधिकार पुरूषों के बराबर नहीं बल्कि पुरूषों से बड़ा है।"

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में 63वें वार्षिकोत्सव के समापन सत्र महिला सम्मेलन में सम्मान, सृजन और शक्ति का प्रतीक नारी का वेद में स्थान विषय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। ब्रिजनौर से पधारे वैदिक भजनोपदेशक आचार्य भीष्म जी ने भजनों के माध्यम से कहा तू ही लक्ष्मी, तू ही सरस्वती, तू ही दुर्गा भवानी, जग ने जानी तेरी अमर कहानी। उन्होंने कहा शत्रु हाथ में आते ही उस पर दया दिखानी यही हमारी हार का कारण रहा है। हमें यथायोग्य व्यवहार करना चाहिये। मिलकर चलो आगे बढ़ो। चरित्र निर्माण होना चाहिये। उन्होंने कहा मेरे देश की बहनों तुमको देख रही दुनिया सारी, तुम पर बड़ी जिम्मेदारी घर-घर को तुम स्वर्ग बना दो, हर आंगन को फूलवारी। प्राणी मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है फिर स्त्रियों को क्यों नहीं है। बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ आंतरिक सौन्दर्य को बढ़ाना संस्कार है। तत्पश्चात् रमाला से पधारे वैदिक विद्वान आचार्य धीरज सिंह जी ने कहा गृहणी से रहित घर तो जंगल के समान होता है स्त्री का अधिकार पुरूषों के बराबर नहीं पुरूषों से बड़ा है वेदो से दूर होने के कारण ही स्त्रियों से पक्षपात हुआ है और स्त्रियों को सुनियोजित ढंग से अधिकार विहीन किया गया है कमजोर किया गया है। पति पत्नि का वियोग ही विवाद है पति पत्नि को दूध में जल के समान एक रस होकर रहना चाहिये। स्त्री सुमंगली है अगर उसकी दृष्टि में लज्जा है। स्त्री प्रियदर्शनी होनी चाहिये न कि प्रदर्शनी। परमात्मा ने वेदज्ञान देकर मानव जाति का बहुत उपकार किया है। जिस राष्ट्र की अपनी भाषा व शिक्षा नहीं होती वह राष्ट्र रक्षा तो क्या करेगा अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता है। स्त्री की दुर्दशा मध्यकाल में हुई। मुस्लिम स्त्रियों की दुर्दशा तो आज भी बरकरार है। राष्ट्र की रक्षा चरित्र से होती है। यज्ञ अच्छे आचरण का नाम है। राष्ट्र सुरक्षित होता है तो हम सुरक्षित होते हैं। राष्ट्र असुरक्षित होता है तो हम भी असुरक्षित होते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमति सीमा जी ने की। मंच संचालन मीना वर्मा जी ने किया। तत्पश्चात आए हुए सभी विद्वानों, सन्यासियों, अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए डॉ० पूर्णचन्द्र जी ने कहा कि भविष्य में भी इसी प्रकार अपना अमूल्य सहयोग हमें देते रहेंगे। तत्पश्चात् शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उपस्थिति निम्न रही। ओमप्रकाश आर्य, रेखा गारवाह, डॉ० पूर्णचन्द्र शास्त्री, अनिता आर्य, प्रेमसागर, राजेन्द्र कुमार, सेवाराम, राजकुमार आर्य, योगराज शर्मा, सुरेन्द्र चौहान, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्य, रोशनलाल, देवेन्द्र आर्य, रमा आर्य, अनिल मारवाह, रामकिशोरी सैनी, विजय कुमार गुप्ता, मूलचंद यादव, सविता आर्य, अनिता आर्य, सुमन गुप्ता, आशारानी, धर्मपाल, सुधीर कुमार, प्रकाशचंद वशिष्ठ, सुरेन्द्र यादव, डॉ० राजवीर सिंह वर्मा, अवनीश आर्य, मधु आर्य, दधीचि जी, रघुबीर कौर, प्रेम मुनि, आनंद मुनि जी, किशनलाल शर्मा, विनोद शर्मा आदि रहे।

परीक्षा परिणाम शानदार रहा

आर्य गर्ल्ज़ सीनियर सैकण्डरी स्कूल पुराना बाज़ार लुधियाना का बारहवीं कक्षा का परिणाम गत वर्ष की तरफ इस वर्ष भी शानदार रहा। आर्टस ग्रुप में विद्यालय की छात्रा साक्षी चानना ने 91.3. पायल ने 87.1. व प्रीति ने 84.4. अंक लेकर क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं कामर्स ग्रुप में चाँदनी ने 84.6. नेहा व प्राची जैन ने 77.3. व ईशा ने 75.5. अंक प्राप्त कर क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स्कूल की मैनेजिंग कमेटी की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी, प्रधानाचार्य श्रीमती ज्योति किरण शर्मा व स्टाफ की तरफ से बच्चे व उनके अभिभावकों को शुभ कामनाएं दी गई।

वार्षिक चुनाव

दिनांक 30-4-2017 को आर्य समाज मन्दिर, सरहिन्द में वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें मौजूद सभी सभासदों ने श्री राकेश सूद जी को वर्ष 2017-18 के लिए सर्व सम्मति से प्रधान चुन लिया गया है। उन्हें यह अधिकार भी दिया गया है कि वह अपनी कार्यकारिणी का चुनाव अपनी मर्जी से कर लेवें। निवर्तमान आर्य समाज के प्रधान श्री लव कुमार सूद जी पिछले वर्ष 2016-17 का आय व्यय का व्यौरा प्रस्तुत किया जिसे सर्व सम्मति से पास कर दिया गया।

-राकेश सूद प्रधान, आर्य समाज, सरहिन्द

10 से 14 मई 2017 तक वार्षिकोत्सव में हुई वेद्कथा

आर्यसमाज सेक्टर 32 डी चंडीगढ़ का कार्यक्रम वर्ष में चार बार करते है। ईश्वर की कृपा से इस बार मई मास में ५ दिवसीय वेद्प्रचार प्रोग्राम की रूप रेखा बनी। मधुर आवाज़ के धनी युवा भजनोपदेशक पंडित श्री अजय आर्य जी हस्तिनापुर मेरठ से पूरी संगीत मंडली के साथ आमंत्रित किये गए थे। सिन्थेसाईजर व ढोलक वाले के साथ मिलकर जब उन्होंने हर सभा में अलग-अलग विषय के गीत व भजन पूरी व्याख्या के साथ प्रस्तुत किये तो जनता जर्नादन ने उसको काफी सराहा। आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी प्रात: यज्ञ के सत्र में ईश्वर भक्ति व यज्ञ अनुष्ठान से सम्बंधित विचार रखते थे परन्तु रात्रि के सत्र में वे किसी नए वेदमंत्र के आधार पर समाज परिवार व देश की किसी समस्या के समाधान को ईश्वर भक्ति की मूल धुरी से जोड़ कर व्याख्या करते थे। सायं सत्र ६.३० से ९ तक दो ढाई घंटे का होता था।

एक दिन १० मई २०१७ को दोपहर १.३० पर आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी व प्रधान जी के नेतृत्व में आर्यजनों ने राजभवन जाकर हरयाणा के राज्यपाल श्री प्रो० डॉ० कप्तान सिंह सोलंकी जी से मुलाकात की। उनको आर्यसमाज की ओर से सत्यार्थ प्रकार व कुछ साहित्य भेंट किया। उनसे आर्यसमाज के विभिन्न कार्यक्रमों में आने का आग्रह किया। अभी पूर्णाहुति वाले दिन उन्होंने भीलवाडा जाना पूर्व निर्धारित होने से आने असमर्थता बताई। शिष्ट मंडल में आर्यसमाज के प्रधान व मंत्री जी सहित पांच व्यक्ति थे।

अंतिम दिन रविवार १४ मई को आर्यसमाज के पुरोहित पंडित अविनाश जी का कर्म विषयक व्याख्यान हुआ। सेक्टर ४५ की शासकीय विद्यालय की शिक्षिका डॉ० चाँद कौर मान जी के नेतृत्व में उनके स्कूल की कन्याओं ने भजन सुनाये। अधिवक्ता बहन श्रीमती मीना सेठी जी के साथ साथ आर्य सिलाई केंद्र की २. बेटियों के भी भजन हुए जिनको पंडित अविनाश जी ने तैयारी करवाई थी। महर्षि दयानंद बालाश्रम मोहाली के बहुत छोटे छोटे बच्चो के भी भजन रखे गए।

पंजाब विश्व विद्यालय के संस्कृत के विभागाध्यक्ष डॉ० वीरेंद्र अलंकार जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने अंध विश्वासों से बचने के अनेक उपाय बताये। अपने ऋषि मुनियों को आपने तर्कशील, आप्त व भविष्य दृष्टा होने से सही मायनों में आधुनिक बताया। इस पूर्णाहूति के अंतिम दिवस पर अंतिम व्याख्यान पुरुषार्थी जी का रखा गया। जिसमें उन्होंने नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणाम..... मंत्र की विस्तार से विवेचना की जिसमें हमारी अगली पीढ़ी किस प्रकार की तेजस्वी, ओजस्वी, धार्मिक व यज्ञमय भावों से ओत प्रोत होना चाहिए। इस बात को अनेक उदाहरण से पुष्ट किया था। संतान के निर्माण व बिगड़ने में माता पिता की सतर्कता व अज्ञानता बहुत बड़ा कारण होती है।

मंच का सञ्चालन प्रतिदिन मंत्री श्री हरी किशोर आर्य जी ने किया। आर्यसमाज के नवनियुक्त धर्माचार्य गुरुकुल होशंगाबाद के स्नातक पंडित अविनाश जी का सबसे परिचय करवाया और आर्यसमाजियो से आग्रह किया कि अपने घर के कि विभिन्न आयोजनों में उनकी यथोचित सेवाये ली जावे जिससे उनका लाभ हम सभी उठा सके। प्रधान जी के धन्यवाद करने के बाद ऋषि लंगर में सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। और मधुर स्मृतियों के साथ यह उत्सर समाप्त हुआ।

-हरिकिशोर आर्य मंत्री

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17 RNI No. 26281/74

वेदवाणी

पवित्र यज्ञ !

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

-ऋ० १।८९।८; यजुः० २५।२१; साम० उ० ९।३।९

*ऋषि-**गोतमो राहूगणपुत्रः॥** देवता-**विश्वेदेवाः॥** छन्दः-**विराट्त्रिष्टुप॥***

***विनय**-मन, वाणी और इन्द्रियों के अगोचर भगवान् तो हमें दीखते नहीं है। देवो ! उनके हाथों के रूप में हम तुम्हें ही देख पाते हैं। वे भगवान् तुम्हारे द्वारा ही इस सब ब्रह्माण्ड को चला रहे हैं। इसलिए हे देवो ! हम तुम्हें ही सम्बोधन करते हैं। इस संसार में जन्म पाकर जब होश आया है तब हम देखते हैं कि हम सबको एक दिन मरना है, एक निश्चित आयु तक ही हमें जीना है। तुमने मनुष्य की सामान्य आयु सौ वर्ष की रखी है। हे 'यजत्रा' ! हे यजनीय देवो ! हमें तुम्हारा यजन करते हुए ही १००, ११६ या १२० वर्ष तक जीवित रहना चाहिए। इसके लिए, हे देवो ! हम अपने कानों से सदा भद्र का ही श्रवण करें; जो यजनीय है, जो उचित है, जो कल्याणकारी है, केवल उसे ही सुनें। आँखों से, जो कुछ यजनीय है केवल उसे ही देखें। अभद्र वस्तु, बुरी, अनुचित वस्तु में हमारे कान-आँख कभी न जाएँ। हे देवो ! यही तुम्हारा यजन है, यही तुम द्वारा उस भगवान् का यजन है। हे देवो ! तुम्हारे अंशों से हमारे शरीर की एक-एक इन्द्रिय और एक-एक अङ्ग उत्पन्न हुए हैं। जिस-जिस देव से हमारा जो-जो इन्द्रिय वा अङ्ग बना है, उस-उस अङ्ग द्वारा सदा भद्र का सेवन करना ही उस-उस देव का यजन करना है। हे देवो ! इसी प्रकार हम अपनी एक-एक इन्द्रिय से तुम्हारा यजन करते रहेंगे। हमारे हाथ और पैर सदा भद्र का ही सेवन करने के कारण पूर्ण आयु तक चलने योग्य, दृढ़ और बलवान् होंगे। इन दृढ़ हाथों और पैरों से हम जो कुछ ग्रहण करते हैं, जो कुछ चलते हैं, वह सब तुम द्वारा प्रभु की स्तुति करना है। एवं हम अपने एक-एक बलिष्ठ स्वस्थ अङ्ग से जो भी कुछ भद्र चेष्टा व गति करते हैं, हे देवो ! वह सब प्रभु-यजन है। हम चाहते हैं कि इसी प्रकार हम अपने एक-एक अङ्ग से सदा भद्र ही करते हुए तुम्हारी दी हुई यज्ञिय आयु को पूर्ण कर दें।*

अहा ! अपने स्वस्थ, बलिष्ठ, पवित्र अङ्गों द्वारा सदा भद्र का ही सेवन करने वाले के लिए यह जीवन एक कैसा पवित्र यज्ञ बन जाता है !

"आर्य वीर दल का प्रान्तीय शिविर अलवर में"

दिनांक 22 मई 2017 को आर्य वीरों ने सीखे आत्मरक्षा के गुर-अलवर ! (का. सं.) स्थानीय आर्य कन्या विद्यालय में चल रहे आर्य वीर दल राजस्थान के प्रान्तीय योग व्यायाम व चरित्र निर्माण शिविर में आर्य वीरों ने प्रात: काल की कक्षा में योग, आसन, प्राणायाम के अतिरिक्त जूडो-करांटे व आत्मरक्षा के उपायों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रात: 9.00 बजे आर्य वीरों को वैदिक संध्या एवं यज्ञ करना सिखाया गया। बौद्धिक सत्र में आचार्य गोविन्द सिंह-अजमेर वालों में आर्य वीर दल के उद्देश्य आवश्यकता एवं आदर्श पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य वीर दल का उद्देश्य बौद्धिक संस्कृति की रक्षा करना समस्त उपायों द्वारा क्षात्र दर्म का प्रचार करना, राष्ट्र रक्षा के लिए किसी भी विपत्ति का सामना करने के लिए तैयार रहना तता जनता की सेवा के लिए आर्यवीरों को प्रशिक्षण देना है।

सायंकालीन प्रशिक्षण में लाठी संचालन, भाला संचालन, छुरी के दाव एवं विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर प्रबन्धक प्रदीप कुमार आर्य ने बताया कि राजस्थान प्रान्त के समस्त संभागों से आये हुए 200 से अधिक आर्यवीर शिविर में भाग ले रहे है।

शिविर में प्रधान शिक्षक यतीन्द्र के साथ व्यायाम शिक्षक कालूराम आर्य, भाग चन्द आर्य, सत्यनारायाण शास्त्री, गिरीश आर्य, शुभम आर्य, गगेन्द्र आर्य सुरेन्द्र आर्य, सुरेन्द्र आर्य, मनोहर आर्य, संजीव आर्य, सुनील आर्य प्रशिक्षण दे रहे हैं।

नोट-यह शिविर प्रान्तीय स्तर का है इसलिए अपने प्रान्तीय कार्यालय के समाचार पत्रों को भी भेजने का कष्ट करें।

-प्रदीप कुमार आर्य मंत्री

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।